168

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA ®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

THE VISION STATMENT O THE COLLEGE IS सत्कर्मी रती वाढो

बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता.कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH/MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | October 2019 Special Issue | 01

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC
[illegible]
वसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | October 2019 Special Issue | 017

61) नागार्जुन के उपन्यासों में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. रामकृष्ण बदने, नांदेड ||155

62) समकालीन महिला उन्यासकारों के उपन्यास में चित्रित स्त्री चेतना
डॉ. रत्नामाला धारबा धुळे, हिंगोली ||158

63) समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री-चेतना : एक अध्ययन
डॉ. संजीवकुमार विठ्ठलराव नरवाडे, हिंगोली ||160

64) दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. सविता चोखोबा किर्ते, लातूर ||164

65) वीरांगना झलकारीबाई उपन्यास में स्त्री चेतना
सावते प्रकाश नवनीतराव, सावते राजू अशोक, बीड. ||166

66) मैत्रेयी पुष्पा और राजी सेठ के उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. सय्यद शौकतअली, बीड ||168

67) 'आपका बंटी' उपन्यास में नारी के मनोभावनाओं की सार्थक अभिव्यक्ति
डॉ. नवनाथ गाडेकर, सोलापूर ||170

68) समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. नागनाथ संभाजी वारले, बसमतनगर ||171

69) "विज्ञापन जगत में नारी का शोषन" चित्रा मुदगल के 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के संदर्भ में
डॉ. शिवाजी सांगोळे, जालना ||173

70) विस्थापन के परिप्रेक्ष्य में नारी चेतना : "विशेष संदर्भ उपन्यास देनपा तिब्बत को डायरी"
प्रा. सोनकाम्बले पदमानंद पिराजीराव, नांदेड ||175

71) समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना : 'छिन्नमस्ता' के विशेष संदर्भ में
प्रा. डॉ. श्रीरंग वट्टमवार, नांदेड ||177

[redacted]

73) गीतांजलि श्री के 'माई' उपन्यास में स्त्री चेतना
श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव, लातूर ||182

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | October 2019 Special Issue | 0179

जड मुल्यों को चुनौती देकर सक्षम रुप से अपनी पहचान बनाती है। वह उपन्यास नारी के आर्थिक स्वातंत्र्य, परंपरा एवं मूल्यों के प्रति विद्रोह एवं आधुनिक दांपत्य-संबंधों को सही पहचान द्वारा नारी को नयी दिशा प्रदान करने का संकेत है। यह आधुनिक नारी की मानसिकता का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। यह उपन्यास नारी को अपनी अन्तर्निहित शक्ति को पहचानकर अपनी मुठ्ठीभर जमीन पर चेतना का सिंचन करके आगामी पिढ़ी को अधिक सशक्त एवं अधिक ईमानदारी से अपने परिवेश एवं समाज से संघर्ष करने की ओर दिशा निर्देश करता है।

संदर्भसूची :

१. अस्मिता-डॉ.अंजली चौधरी, पृ.५५.
२. स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य - क्षमा शर्मा, पृ.२४.
३. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार- डॉ.वैशाली देशपांडे, पृ.६९.
४. अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री विमर्श. डॉ.कृष्णा पोतदार, पृ.३७.
५. संचारिका-नारायण वाकळे, अक्टूबर-नवम्बर-दिसंबर २००८, पृ.१९.
६. छिन्नमस्ता-प्रभा खेतान, पृ.७०.
७. छिन्नमस्ता-प्रभा खेतान, पृ.१५१.
८. छिन्नमस्ता-प्रभा खेतान, पृ.११.

❑❑❑

72

मैत्रीय पुष्पा के उपन्यासों में नारी संघर्ष (उपन्यास अगनपाखी के संदर्भ में)

[redacted]
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली जि. हिंगोली.

****

इक्कसवीं सदी की महिला साहित्यकारों ने समस्त विषयों को छुआ किंतु स्त्री-संवेदना और स्त्री-जीवन उनके सृजन के केंद्र में रहा। साहित्य मानवीय संवेदना के चिंतन की उत्तम अभिव्यक्ति है। स्त्री तो संवदना का मूर्त रूप है अर्थात कोई भी साहित्य स्त्री बिना पूर्ण नहीं है। इसलिए स्त्री और साहत्य का संबंध अखंड है। स्त्री ने सामाजिक, नैतिक एंव सांस्कृतिक रूप में भी साहित्य को अपूर्ण योगदान प्रदान किया है। आधुनिककालीन साहित्य में स्त्री को लेकर इतना कुछ सृजन किया गया कि स्त्री- विमर्श का दौर ही प्रारंभ हो गया। जहाँ अन्य श्रेत्रों की तरह साहित्य में भी पुरूषों का वर्चस्व था, वहाँ महिलाओं ने बडी तेजी से साहत्य में इस तरह से कदम रखा कि वह छा ही गयी। इन महिला साहित्यकारों ने स्त्री जीवन के विविध पहलुओं, परिस्थितिओं को पूरी जिम्मेदारी के साथ उकेरा। कृष्णा खत्री के अनुसार "सबसे बडी बात, भोगनेवाली भी स्त्री और अभिव्यक्ति करनेवाली भी स्त्री। यह भोगा सच उपभोगता की जबानी अभिव्यक्त हुआ तो साहित्य में नएपन का, ताजगी का और प्रखरता का पदार्पण हुआ और एक जीती जागती क्रांति ने जन्म ले लिया।" इक्कीसवीं सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थक स्थितियों तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसलिए स्त्री-विमर्श चिंतन ने साहत्य में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

समाज में जहाँ भी दमन है, शोषण है, अत्याचार है स्त्री साहित्य उसके विरोध में खडा हुआ। अब दो तरीके से स्त्रीवादी साहित्य सजृन किया जा रहा है- एक सामाजिक शोषण के खिलाफ और दुसरा देह-भोग के खिलाफ। "आज का सृजन नारीवादी सृजन नही, नारी केंद्रित सवालों को बडे आशयों में लानेवाला नारी की मुक्ति को साधारण जन की सार्वदेशिक मुक्ति से जोडनेवाला, पर बेहतर मानवीय और तर्कसंगत सामाजिक संरचना में नारी को उसकी सही हैसयित के साथ प्रतिष्ठा देने की कोशिश में लगा नारी अस्मिता

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication
October 2019
Special Issue
0181

किरण नहीं पाती है तो वह अपनी माँ से ससुराल न जाने की जिद करती है।

भुवन अपने जीवन से समझौता करने का तैयार नहीं है अर्ध्द विक्षिप्त पति कुंवर विजयसिंह के साथ रहने के बजाय अपने मायके में रहना चाहती है। क्योंकि गुलामी का सुख चेतना संपन्न भुवन को नहीं भाता है। उसके इस संघर्ष में उसकी माँ उसका साथ नहीं देती है क्योंकि हमारे समाज में यह मान्यता है कि एक बार लडकी की शादी हो जाती है तो उसकी अर्थी भी ससुराल से ही उठनी चाहिए। भुवन की माँ इस विचारधारा को मानती है और वह कहती है - "तें कुंवारेपन को सपने देख रही है बेटा गया समय अपनी देह से लिपटा है क्या? बिटिया की जात बाप के ऑगन में तितली बनकर खेलती है, गाय की तरह विदा होती है व्याह पीछे कुत्ता की जौन निभानी पडती है, भौंको, चोखो तो सासरे पच्छदारी में ही"[५] इस प्रकार स्त्री संघर्ष में उसे अपने मायके में आसरा नहीं मिलता है क्योंकि उसके मायके वाले लोग घर में लडकी बैठाने की बदनामी नहीं लेना चाहते है। मैत्रयी पुष्पाने अपने इस उपन्यास के द्वारा रीतिरिवाज व धर्म के नाम पर विधवा स्त्री को किस प्रकार शोषित किया जाता है इसे दर्शाया है। यह प्रथा सती प्रथा इस प्रथा के अनुसार एक स्त्री अपने पति के मरने पर स्वंय अपने शरीर को संहर्ष त्याग देती है इस प्रकार सती होना हिन्दू समाज में गौरव की बात मानी जाती है, सती एक ऐसी प्रथा थी जिसमें विधवा स्त्री को अपने पति की चिता में जिन्दा मार दिया जाता था। कहा जाता था कि यह आत्मदाह उसकी स्वेच्छा से हे, पर जिस समाज में स्त्री के अपने जीवन में घर से बापहर जाने अपनी मर्जी से प्रेम या विवाह करने और घर के किसी महत्वपुर्ण फैसले का निर्णय लेने को अधिकार नहीं दिया गया था, फिर सजी होने का निर्णय कैसे उसका था।

मैत्रयी पुष्पा ने 'अगनपाखी' उपन्यासमें स्त्री को घर के अन्दर नियन्त्रित किया जाता है बचपन से ही उसे साचों में डाला जाता है। भुवन के पिता न होने के कारण और बचपन के साथ लडकों के खेल खेलती है जो नानी यानी भुवन की माँ को अच्छा नहीं लगता है चन्दन कहता है - "भुवन का पतंग उडाना नानी को फूटी ऑखों नही आया। साइकिल मिली, उसने चलाई गिरने से जादा सीख नहीं पाई कि नारी भगवानदास से लडने पहूँच गयी।"[६] नानी ने उसे पढने से भी बैठा दिया क्योकि भुवन ने मास्टर से बहस कर ली थी और वह भुवन को घर में रखना चाहती थी। उसकी मदद चाहती थी साथ हो भुवन के खुले व्यवहार की नियान्त्रित भी करना चाहती थी। तभी तो चन्दर कहता है - "नानी ने उसे इस बात के लिए पिटा, गालियों दी। भट्टी छोत, बाप भइया नहीं तो तू ऐसी मर्दनमार भई जा रही है"[७] नानी भुवन को साँचों में ढाल रही है जैसे वह स्वंय ढल चुकी है क्यों कि आदर्श स्त्री वही जो पितृसत्ताक नैतिक प्रतिनामो को पूरी निष्टा से आत्मसात करती हुई पीढी दर पीढी उसे आगे बढाती है। उपन्यास में लेखिका ने जिलाझासी के विराट गाँव और उसके इर्द- गिर्द के प्रदेश का ग्रामांचल का यथार्थ चित्रण किया है। गाँव में अन्य समस्याओं के साथ - साथ जाति व्यवस्था और वर्गगत झगडे भी मुख्य है। गाँवों में जितने स्नेहभाव में अधिकता होती है उससे बढकर आपसी वैर में तीव्रता विधमान होती है। घायल आदमी पीढियों तक अपना दर्द भूला नहीं पाता। आपसी वैर के मूल में जर, जमीन और जोरु ही कारण ने अजयसिंह के साथ बैर का कारण इस प्रकार बताया है - "इसने (छोटे कुंवर विजयसिंह ने) हमारी मजूरनी खेत में गिरा ली। देखा नहीं कि मजूरनी के संग मजुर भी है, हमारे पिता जी ने इशारा दिया सो अच्छी तरह कुचला। ठौर - कठौर मारा, मर्दानगी खत्म कर दी। बस तभी से बैर चला आ रहा है"[८] इस प्रकार स्पष्ट है कि बदलते हुए युग में व्यक्ति की सहनशीलता खत्म होती चली आई है। आज व्यक्ति आदर्श, समय के खोखलेपन की परतो को खोलकर सिर्फ निजीपन की खोज में अपने अस्तित्व को स्थिर बनाने की कोशिश में है यही इक्वीसवी शदी की निशानी है।

अतः कहना होगा कि इक्कीसवीं सदी के स्त्री साहित्यकारों ने कुछ तीखे, ज्वलंत प्रश्नों, अंतर्विरोधों और विरोधाभासों को अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है जिससे स्त्री-सृजन की एक अलग पहचान बनने लगी है। इनकी रचनाओं में स्त्री के अधिकारों के प्रति सजगता के साथ-साथ समाज की अन्य समस्याएँ भी उद्घाटीत हुई दिखाई देती है। इनकी सृजनात्मकता आक्रमक, तीखा और पितृक समाज की कडी आलोचना से परिपूर्ण है। यह परिवर्तन इक्कीसवी सदी में सर्वाधिक दृष्टित हुआ। जो स्त्री-लेखन सिर्फ घर, परिवार, बच्चे, स्त्री-पुरूष बिखराव तक सीमित था उस स्त्री-लेखन की आंतरिक और बाहरी दुनिया में इस सदी में काफी बदलाव आया है।

संदर्भ :-

१. संपा. मीरा गौतम-अंतिम दो दशकों का हिंदी साहित्य
२. मैत्रयी पुष्पा - अगनपाखी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-प्रथम, २००२, - पृ. ५-६
३. वही - पृ. १७
४. वही - पृ. ७२
५. वही - पृ. ७३
६. वही - पृ. ३५
७. वही - पृ. ३६
८. वही - पृ. १४०

T.C.
Assis...
Shivaji College, Hingoli
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli